INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 12 | JANUARY – 2026

स्वतंत्रता आंदोलन में स्थानीय क्रांतिकारियों का योगदान शहडोल जिले के संदर्भ में

विक्रम सिंह टेकाम
शोधार्थी इतिहास
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. नृपेन्द्र सिंह परिहार
प्राचार्य
डी.आर.एस.बी.एड. कॉलेज, गंगापुर, जिला रीवा (म.प्र.)

सारांश –

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन केवल राष्ट्रीय नेतृत्व तक सीमित न रहकर देश के विभिन्न अंचलों में फैले स्थानीय संघर्षों और जनभागीदारी का परिणाम था। मध्यप्रदेश के शहडोल जिले में भी ग्रामीण समाज, आदिवासी समुदाय तथा स्थानीय नेताओं द्वारा ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अनेक संगठित प्रयास किए गए। वन–अधिकारों पर नियंत्रण, कर–भार, बेगार–प्रथा और प्रशासनिक दमन जैसी नीतियों ने क्षेत्रीय असंतोष को जन्म दिया, जिसने असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान व्यापक रूप धारण किया। इस अध्ययन में अभिलेखीय स्रोतों, जिला गजेटियर, क्षेत्रीय इतिहास–ग्रंथों तथा लोकस्मृतियों के आधार पर शहडोल जिले में सक्रिय स्थानीय क्रांतिकारियों, ग्राम–स्तरीय नेतृत्व, महिला सहभागिता और आदिवासी चेतना की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। परिणामस्वरूप यह स्पष्ट होता है कि इन स्थानीय प्रयासों ने राष्ट्रीय आंदोलनों को सामाजिक आधार प्रदान किया तथा स्वतंत्रता संघर्ष को जनसरोकारों से जोड़ा। शहडोल जैसे जिलों में हुए क्षेत्रीय आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की जमीनी शक्ति थे, जिन्हें इतिहास–लेखन में समुचित स्थान दिए जाने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द – स्वतंत्रता आंदोलन, स्थानीय क्रांतिकारी, आदिवासी सहभागिता एवं भारत छोड़ो आंदोलन।

प्रस्तावना –

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन एक व्यापक, बहुआयामी तथा दीर्घकालिक संघर्ष था, जिसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों, समुदायों और सामाजिक वर्गों की सक्रिय भागीदारी रही। यद्यपि राष्ट्रीय स्तर पर महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचंद्र बोस तथा भगत सिंह जैसे नेताओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही, किंतु इस आंदोलन की वास्तविक शक्ति देश के ग्रामीण अंचलों, आदिवासी क्षेत्रों और जिला–स्तरीय कार्यकर्ताओं में निहित थी। स्थानीय क्रांतिकारियों, ग्राम–स्तरीय नेताओं और सामाजिक संगठनों ने जनसाधारण को राजनीतिक चेतना से जोड़ते हुए स्वतंत्रता संग्राम को व्यापक सामाजिक आधार प्रदान किया।

मध्यप्रदेश का शहडोल जिला, जो विंध्य क्षेत्र में स्थित एक आदिवासी–बहुल और वन–संपदा प्रधान भूभाग है, औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध स्थानीय प्रतिरोध की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। ब्रिटिश काल

में यह क्षेत्र 'मध्य प्रांत' के अंतर्गत आता था और यहाँ वन–नीतियों, भूमि–राजस्व व्यवस्था, खनन–कार्यों तथा प्रशासनिक नियंत्रण के कारण ग्रामीण और जनजातीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। परंपरागत वन–अधिकारों में कटौती, बेगार–प्रथा तथा करों की कठोर वसूली ने सामाजिक असंतोष को जन्म दिया, जिसने धीरे–धीरे राजनीतिक स्वरूप ग्रहण किया और राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ गया।

शहडोल जिले में स्वतंत्रता आंदोलन के प्रसार का स्वरूप विशिष्ट रहा। यहाँ कांग्रेस संगठनों के गठन, प्रभात फेरियों, विदेशी वस्त्र बहिष्कार, चरखा–प्रचार तथा सत्याग्रह जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से जन–जागरण किया गया। साथ ही, आदिवासी समुदायों की भागीदारी, महिलाओं की सक्रिय भूमिका और युवाओं द्वारा संचालित गुप्त गतिविधियों ने आंदोलन को सामाजिक गहराई प्रदान की। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान क्षेत्र में उभरे तीव्र जन–प्रदर्शन इस बात के साक्ष्य हैं कि यह जिला राष्ट्रीय संघर्ष की धारा से पूर्णतः जुड़ चुका था।

वर्तमान शोध–लेख का उद्देश्य शहडोल जिले में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान सक्रिय स्थानीय क्रांतिकारियों और जन–नेताओं के योगदान का ऐतिहासिक विश्लेषण करना है। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार स्थानीय स्तर पर उत्पन्न सामाजिक–आर्थिक असंतोष राष्ट्रीय राजनीतिक आंदोलनों से संबद्ध हुआ और कैसे ग्राम–स्तरीय प्रयासों ने औपनिवेशिक शासन की नींव को कमजोर करने में भूमिका निभाई। क्षेत्रीय इतिहास के इस प्रकार के अध्ययन न केवल स्वतंत्रता संग्राम की समग्रता को उजागर करते हैं, बल्कि उन अनाम नायकों को भी पहचान दिलाते हैं, जिनके बलिदानों से भारत की स्वतंत्रता संभव हो सकी।

अध्ययन क्षेत्र –

शहडोल जिला मध्यप्रदेश के उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित है और ऐतिहासिक रूप से विंध्य–बघेलखंड अंचल का अंग रहा है। औपनिवेशिक काल में यह क्षेत्र 'मध्य प्रांत' के प्रशासनिक ढाँचे में सम्मिलित था। भौगोलिक दृष्टि से शहडोल का भूभाग पठारी संरचना, घने वन क्षेत्रों तथा सोन नदी की सहायक नदियों से युक्त रहा है। यहाँ की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि, वनोपज संग्रह और खनन गतिविधियों पर आधारित रही है, जिससे औपनिवेशिक शासन की नीतियों का प्रभाव यहाँ के समाज पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ा।

जनसांख्यिकीय संरचना की दृष्टि से यह जिला आदिवासी–बहुल रहा है, जिसमें गोंड, बैगा और कोल समुदायों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। इन समुदायों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, वनाधिकारों पर निर्भरता तथा परंपरागत प्रशासनिक संरचनाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान यहाँ के जनप्रतिरोध को विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया। ब्रिटिश प्रशासन द्वारा लागू किए गए वन–कानूनों, राजस्व नीतियों और श्रम–नियंत्रण के कारण उत्पन्न असंतोष ने राजनीतिक चेतना को जन्म दिया, जो आगे चलकर राष्ट्रीय आंदोलनों से जुड़ा। इस प्रकार शहडोल जिला स्वतंत्रता संग्राम के क्षेत्रीय अध्ययन के लिए एक उपयुक्त केस–स्टडी प्रस्तुत करता है।

अध्ययन के उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध–लेख के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1. शहडोल जिले में स्वतंत्रता आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करना।
2. स्थानीय क्रांतिकारियों, ग्राम–स्तरीय नेताओं तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका का मूल्यांकन करना।
3. आदिवासी समुदायों और महिलाओं की सहभागिता को रेखांकित करना।
4. असहयोग, सविनय अवज्ञा तथा भारत छोड़ो आंदोलनों के स्थानीय स्वरूप का अध्ययन करना।
5. औपनिवेशिक नीतियों और प्रशासनिक दमन के प्रभावों का आकलन करना।
6. स्वतंत्रता–उपरांत स्मृतियों और क्षेत्रीय इतिहास–लेखन में शहडोल के स्थान का परीक्षण करना।
7. जिला–स्तरीय अध्ययनों के माध्यम से राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन की व्यापकता को समझना।

साहित्य समीक्षा –

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर उपलब्ध साहित्य अत्यंत विस्तृत है, जिसमें राष्ट्रीय नेतृत्व, प्रमुख आंदोलनों तथा वैचारिक विकास पर केंद्रित अनेक क्लासिक अध्ययन सम्मिलित हैं। बिपिन चंद्र (2020) और

सुमित सरकार (2021) जैसे इतिहासकारों ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध भारतीय प्रतिरोध के राजनीतिक और सामाजिक आयामों का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। इन अध्ययनों में राष्ट्रीय आंदोलनों की रूपरेखा स्पष्ट होती है, किंतु जिला–स्तरीय और क्षेत्रीय अनुभव अपेक्षाकृत कम विस्तार से सामने आते हैं।

आदिवासी आंदोलनों के संदर्भ में के.एस. सिंह (2022) तथा अन्य विद्वानों ने मध्य भारत में वन–अधिकारों और जनजातीय प्रतिरोध के ऐतिहासिक स्वरूप पर प्रकाश डाला है। ये अध्ययन शहडोल जैसे जिलों की सामाजिक संरचना को समझने में सहायक हैं, परंतु विशिष्ट रूप से इस जिले को केंद्र में रखकर किए गए शोध अभी भी सीमित हैं।

मध्यप्रदेश तथा मध्य प्रांतों के इतिहास से संबंधित जिला गजेटियर और सरकारी अभिलेख (मध्यप्रदेश शासन, 2023) स्थानीय आंदोलनों, प्रशासनिक नीतियों और सामाजिक परिस्थितियों का मूल्यवान विवरण प्रदान करते हैं। हाल के वर्षों में प्रकाशित जर्नल लेखों–वर्मा (2021), मिश्रा (2022) और पटेल (2023) ने क्षेत्रीय राष्ट्रवाद, ग्रामीण लामबंदी और भारत छोड़ो आंदोलन के स्थानीय आयामों को रेखांकित किया है। फिर भी शहडोल जिले पर केंद्रित समग्र और व्यवस्थित अध्ययन का अभाव दिखाई देता है।

इस प्रकार उपलब्ध साहित्य का समीक्षात्मक विश्लेषण यह संकेत देता है कि यद्यपि राष्ट्रीय और प्रांतीय स्तर पर स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास पर्याप्त रूप से लिखा जा चुका है, किंतु शहडोल जैसे जिलों में सक्रिय स्थानीय क्रांतिकारियों और जनआंदोलनों पर केंद्रित सूक्ष्म अध्ययनों की आवश्यकता बनी हुई है। प्रस्तुत शोध इसी रिक्ति को भरने का प्रयास करता है।

विश्लेषण –

शहडोल जिले में स्वतंत्रता आंदोलन के स्वरूप का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि यह संघर्ष केवल राजनीतिक घोषणाओं तक सीमित नहीं था, बल्कि सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों से उत्पन्न असंतोष का संगठित रूप था। औपनिवेशिक शासन द्वारा लागू की गई भूमि–राजस्व नीतियाँ, वन–कानून, खनन नियंत्रण तथा श्रम–व्यवस्थाएँ स्थानीय समाज पर गहरा प्रभाव डालती थीं। इन नीतियों के कारण किसानों और आदिवासी समुदायों की परंपरागत आजीविका बाधित हुई, जिससे विरोध की चेतना विकसित हुई और स्वतंत्रता आंदोलन के विभिन्न चरणों में जनसहभागिता बढ़ती गई।

असहयोग आंदोलन के दौरान शहडोल क्षेत्र में देखी गई गतिविधियाँ–विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार, सरकारी संस्थाओं से दूरी और ग्राम–स्तरीय सभाएँ–इस बात का संकेत देती हैं कि राष्ट्रीय आंदोलनों का स्थानीय रूपांतरण किस प्रकार हुआ। यहाँ कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने ग्रामीण समस्याओं को आंदोलन से जोड़ते हुए लोगों को राजनीतिक प्रक्रिया का भाग बनाया। यह प्रक्रिया न केवल राजनीतिक जागरूकता बढ़ाने में सहायक बनी, बल्कि सामाजिक सुधार की दिशा में भी प्रेरक सिद्ध हुई।

सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन के समय शहडोल जिले में जो उग्रता दिखाई दी, वह स्थानीय समाज की परिपक्व होती राजनीतिक चेतना को दर्शाती है। युवाओं द्वारा भूमिगत गतिविधियों, सरकारी संचार–व्यवस्था में व्यवधान तथा प्रतीकात्मक प्रतिरोध के प्रयासों से यह स्पष्ट होता है कि आंदोलन अब केवल नैतिक अपील तक सीमित न रहकर प्रत्यक्ष प्रशासनिक चुनौती का रूप लेने लगा था। ब्रिटिश शासन द्वारा दमनात्मक उपायों–गिरफ्तारियाँ, आर्थिक दंड, तलाशी अभियान के बावजूद आंदोलन का पूर्णतः समाप्त न होना उसकी सामाजिक जड़ों की गहराई को दर्शाता है।

आदिवासी समाज की भागीदारी शहडोल के आंदोलन की एक विशिष्ट विशेषता थी। वन–अधिकारों की रक्षा, सामाजिक सम्मान और आर्थिक स्वतंत्रता की आकांक्षा ने उन्हें राष्ट्रीय संघर्ष से जोड़ा। कई ग्राम–स्तरीय नेताओं ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ समन्वय स्थापित कर सामूहिक सभाएँ आयोजित कीं, जिससे आंदोलन को व्यापक जनाधार मिला। महिलाओं की भूमिका भी विश्लेषणात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण रही, उन्होंने केवल सांस्कृतिक गतिविधियों तक सीमित न रहकर संगठनात्मक कार्य, संदेश–प्रेषण और सत्याग्रह में सक्रिय भागीदारी की।

इस प्रकार शहडोल जिले में स्वतंत्रता आंदोलन का विश्लेषण यह दर्शाता है कि स्थानीय क्रांतिकारी और जन–नेता राष्ट्रीय आंदोलन की वैचारिक दिशा को ग्रामीण यथार्थ से जोड़ने में सफल रहे। उन्होंने राजनीतिक स्वतंत्रता की अवधारणा को दैनिक जीवन के संघर्षों–भूमि, वन, श्रम और सम्मान से संबद्ध किया। इसी अंतर्संबंध

ने आंदोलन को स्थायित्व और व्यापकता प्रदान की तथा औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध जनसमर्थन को सुदृढ़ किया।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शहडोल जिला भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के मानचित्र पर एक महत्वपूर्ण, यद्यपि अपेक्षाकृत कम चर्चित, केंद्र रहा। यहाँ के स्थानीय क्रांतिकारियों, ग्राम–स्तरीय नेताओं, आदिवासी समाज तथा महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध जन–आंदोलन को सामाजिक गहराई प्रदान की। भूमि–राजस्व व्यवस्था, वन–कानूनों और श्रम–शोषण से उत्पन्न असंतोष ने राजनीतिक चेतना को जन्म दिया, जिसे राष्ट्रीय आंदोलनों–असहयोग, सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आंदोलन से जोड़कर व्यापक प्रतिरोध में परिवर्तित किया गया। शहडोल में उभरे आंदोलनों का विश्लेषण यह भी दर्शाता है कि स्थानीय नेतृत्व ने राष्ट्रीय विचारधाराओं को क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुरूप ढालते हुए उन्हें जनसाधारण तक पहुँचाया। ग्रामीण सभाओं, प्रभात फेरियों, विदेशी वस्त्र बहिष्कार और भूमिगत गतिविधियों के माध्यम से आंदोलन ने प्रशासनिक तंत्र को चुनौती दी। आदिवासी समुदायों की भागीदारी ने इस संघर्ष को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित न रखकर सामाजिक न्याय और अधिकारों की आकांक्षा से भी जोड़ा। इस शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि शहडोल जैसे जिलों में संचालित क्षेत्रीय आंदोलनों ने स्वतंत्रता संग्राम को व्यापक जनाधार प्रदान किया, जिसकी बदौलत औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध राष्ट्रीय स्तर पर सुदृढ़ प्रतिरोध संभव हो सका। भविष्य के अनुसंधान के लिए यह आवश्यक है कि जिला–स्तरीय अभिलेखों, मौखिक इतिहास तथा पारिवारिक अभिलेखों का व्यवस्थित संकलन किया जाए, ताकि इन स्थानीय सेनानियों के योगदान को राष्ट्रीय इतिहास–लेखन में समुचित स्थान मिल सके।

संदर्भ –

1. सरकार, सुमित–आधुनिक भारत : 1885–1947, अद्यतन संस्करण, मैकमिलन इंडिया, नई दिल्ली, 2021।
2. सिंह, के.एस. – भारत में जनजातीय आंदोलन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2022।
3. मध्य प्रदेश शासन, जिला गजेटियर : शहडोल, शासकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री विभाग, भोपाल, 2023।
4. वर्मा, राजेश – मध्य भारत में स्वतंत्रता आंदोलन. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018।
5. मिश्रा, संजय – "औपनिवेशिक मध्य भारत में वन नीतियाँ और जनजातीय प्रतिरोध." स्टडीज इन हिस्ट्री, खंड 38, अंक 1, 2022
6. शर्मा, नीरज – "मध्य भारत में स्मृति, स्मारक और विस्मृत स्वतंत्रता सेनानी", समकालीन ऐतिहासिक अध्ययन, खंड 6, अंक 1, 2025